पञ्चांग के गुलाम

सम्पादक :

वेद प्रकाश 'सुमन'

(सम्पादक 'तपोभूमि' मथुरा)

卐

प्रकाशक :

सत्य प्रकाशन

वृन्दावन मार्ग, मथुरा

*

प्रथम बार]   सं० २०४२ वि.   [मूल्य ८० पै.

हर समाज के शिक्षित-अशिक्षित हजारों लोग शकुन-अपशकुन के अन्धविश्वासों का वहम अपने मन में पाले रहते हैं। परन्तु यदि विश्लेषण किया जाय,तो यही सत्य सामने आता है कि ये मान्यतायें केवल भय या वहम मात्र हैं। हम केवल सावधानी बरत सकते हैं, जीवन क्रम नहीं बदल सकते।

—सम्पादक

अपनी दादी जी के साथ किसी समारोह में भाग लेने जा रही थी कि कहीं से जोर से छींक की आवाज आई। दादी जी एकदम अन्दर आकर बैठ गईं, कहा, बैठ जाओ थोड़ी देर, छींक हो गई। अपशकुन हो गया।

छात्र जीवन में परीक्षा के लिए जाते समय स्याही हाथों कपड़ों पर लग जाती तो सहपाठिनियाँ कहतीं यह तो बहुत अच्छा शकुन है बहुत अच्छे नम्बर मिलेंगे (मैं मन में सोचती कापी खाली छोड़ दूं तब भी)।

और बिल्ली ने तो लाखों लोगों की नाक में दम कर रखा है। एक घर में दूध का सफाया करके सीधे सड़क पार करके सामने वाले घर में चूहा तलाश करने जाती है और उसका यही रास्ता काटना न जाने कितने लोगों को देर करा देता है।

कहते हैं कि सुबह जमादार का सामने मिलना शुभ होता है। अब भला सुबह वो नहीं तो और कौन मिलेगा सड़क पर।

विवाह के शुभ संस्कार हो रहे हैं और जाने-अनजाने मिट्टी का कलश टूट जाए तो सबके चेहरे ऐसे उतर जाते हैं जैसे कर्फ्यू लग गया है।

सप्ताह के विशेष वार या दिन को सुदूर यात्रा पर जाना

अशुभ माना जाता है, यहाँ तक कि उस विशेष वार को पुरुष अपने बालों की कटिंग नहीं करायेंगे, महिलायें बाल नहीं धोयेंगी ।

गृह प्रवेश हो रहा हो तो खीर बनाई जाती है । खुशी के अवसर पर मिष्ठान्न भोजन तो होना ही चाहिए लेकिन इस अवसर पर बनने वाली खीर में जानबूझ कर उफान लाया जाता है और उसको चौके से बाहर तक बहने दिया जाता है । शायद पुराने जमाने की घी दूध की नदियाँ बहाने वाली कहावत को चरितार्थ किया जाता है । लेकिन आज के समय में तो दूध की यह बरबादी देखो नहीं जाती है ।

असमान से तारा टूटता दिखेगा तो उसके भी कुछ मतलब लगाए जायेंगे । किसी विशेष तिथि पर चांद देखना शुभ है और किसी पर अशुभ ।

क्रिकेट के एक प्रसिद्ध खिलाड़ी विस्तर से अपने बाँए तरफ से उठना बहुत अशुभ समझते हैं और एक खिलाड़ी मैच में तीसरे नम्बर पर बैटिंग करने से कतराते हैं ।

बाँयी आंख और अङ्ग का फड़कना शुभ समझा जाता है जबकि दाएं का अशुभ । बांएं पैर में खुजली है तो यात्रा और दाएं में है तोआलोचना का ।

हर समाज के शिक्षित-अशिक्षित हजारों लोग शकुन-अपशकुन का वहम अपने मन में पाले रहते हैं । हमारे देश में ही नहीं दूसरे देशों में भी ये अन्धविश्वास अपना जाल पूरी तरह फैलाये हुए हैं । जापान में चाय की सेरेमनी होती है, उसमें केटली व चम्मच लाल कपड़े से ही साफ करना शुभ माना जाता है । चीन में मृत आत्मा की शान्ति के लिए किराए पर रोने के लिए बुलाए जाते हैं । शायद रोने की आवाज स्वर्ग तक पहुँचाने की कोशिश की जाती है ।

सरकारी मकानों, बंगलों तथा उनके नम्बरों के बारे में

ऐसा ही विश्वास पाया जाता है। अमुक बंगले में रहने वाले नेता या अफसर का सत्ताकाल बहुत कम रहता है या अच्छा नहीं रहता, ऐसा कहा जाता है। होटल के तेरह नम्बर के कमरे में ठहरने से अक्सर लोग बचते हैं।

शकुन-अपशकुन के इन अन्धविश्वासों की सत्यता जान के लिये मैंने कुछ दुर्घटनाओं से सम्बन्धित लोगों से चर्चा की।

श्रीमती 'क' के पति सागर के एक बड़े व्यवसायी थे वहाँ से कार द्वारा अक्सर काम से इन्दौर आते-जाते रहते थे। पिछले वर्ष जनवरी में वे गए तो कार ट्रक से टकरा गई और दुर्घटना स्थल पर ही उनकी मृत्यु हो गयी। श्रीमती 'क' से मैंने पूछा क्या उस दिन हर बार से हटकर आपको किसी अपशकुन का आभास हुआ था। श्रीमती 'क' को ऐसा कोई आभास नहीं हुआ था।

हर रोज की तरह श्रीमती 'ख' के पति भी पिछले ५ अक्टूबर को कारखाने में काम करने गए। कोई अपशकुन नहीं हुआ था लेकिन हर रोज की तरह उस दिन वे शाम को वापिस नहीं आए। कारखाने में सत्तर फिट ऊंची क्रेन से उनका पैर फिसल गया और अस्पताल में दम तोड़ दिया।

श्रीमती 'स' का पुत्र अपने दोस्तों के साथ पिकनिक पर गया और वहाँ डैम में तैरते हुए डूब गया। बेचारे दोस्त उसे बचा नहीं पाए। श्रीमती 'स' ने भी कहा अपशकुन का आभास होता तो वे उसे जाने ही क्यों देती।

कुछ वर्ष पहले हुए पंजाब मेल के एक्सीडेन्ट में श्रीमती 'द' के पति भी थे। उनके हाथ-पैर की हड्डी टूट गई और समान चोरी हो गया। श्रीमती 'द' ने भी कहा उन्हें याद नहीं कि कोई अपशकुन उनके प्रस्थान के समय हुआ हो।

मैं सोच रही थी इन्हीं दुखद अनहोनी घटनाओं से बचने के लिए हम ये अन्धविश्वास मानते हैं। फिर भी होनी तो होकर ही रहती है।

रेल-बस दुर्घटनायें आये दिन होती रहती है, फिर भी हजारों बस, रेल यात्रियों से ठसाठस भरी हुई रोज चलती हैं। महुर्त, जन्म पत्री देखकर विवाह सम्पन्न होते हैं फिर भी कितने हो असफल हो जाते हैं।

चन्द्रमा, मङ्गल व अन्य ग्रहों की जानकारी हासिल की जाती है, लेकिन अगले क्षण क्या होने वाला है इन्सान नहीं जान सकता। शकुन-अपशकुन मात्र भय व वहम हैं। हम केवल साव-धानी बरत सकते हैं, जोवन क्रम नहीं बदल सकते। —शकुन

क्या मनौतियाँ पूरी होती हैं ?

कितनी मनौतियां पूरी होती हैं और कितनी पूरी नहीं होतीं, इसका कोई हिसाब किसी के पास नहीं होता। फिर भी मनौतियां मानने वाले लोगों के पास कुछ किस्से होते हैं। ये किस्से दूसरों से सुने हुए होते हैं। जो भी कोई मनौती पूरी होने की बात करते हैं और प्रमाण के रूप में कुछ किस्से सुनाते हैं, उनसे पूछा कि ये घटनायें क्या उनके सामने घटी हैं तो उन का अकसर एक ही उत्तर होता है कि फलां कह रहा था और वह झूठ नहीं हो सकता।

मनौतियों के बारे में इस तरह की सुनी-सुनाई बातें ही कही जाती हैं, जिनका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

धार्मिक स्थान महिलाओं के लिये आकर्षण का खास केन्द्र होते हैं। सभी धार्मिक स्थानों पर जाने का उद्देश्य मनो-कामनाएं पूरी होने की आशा होता है। उन जगहों पर जाकर उम्मीद की जाती है कि देवता, भगवान, साधु, पीर, फकीर या उस स्थान का धार्मिक होना ही अपनी इच्छाएं पूरी कर देगा।

लेकिन कुछ खास स्थान तो इसी कारण लोकप्रिय होते हैं कि वहां इच्छाओं की पूर्ति के लिए मनौतियां मानी जाती हैं।

मनौतियाँ किसलिये ?—शादी हुए कुछ साल बीत गए हों और औरत माँ न बन सकी हो तो दूसरी औरत किसी देव-स्थान, साधु की समाधि या पीर के मजार की महिमा बखानती हैं। उन स्थानों के बारे में कुछ चलताऊ किस्से भी बना दिये जाते हैं कि फलां की शादी हुए इतने साल हो गये थे, डाक्टर., हकीमों और वैद्यों से इलाज कराया, कोई फायदा नहीं हुआ था अमुक मन्दिर में या अमुक बाबा को समाधि पर अथवा अमुक पीर के मजार पर जाकर मनौती मानी। वहाँ जाने के नौ महीने बाद ही बच्चा हो गया।

केवल बच्चों के लिए ही नहीं, किसी लड़की के विवाह-सम्बन्ध हाने में अड़चन आरही हो, उपयुक्त वर न मिल रहा हो तो भी मनोति मानी जातो है। घर में कोई बीमार हो, नौकरी न लग रही हो, पति के दफ्तर में कोई घपला होगया हो और नौकरी पर आ बनी हो यानी किसी भी तरह की जटिल समस्या आ गई हो, मनौतियों को हर मर्ज का इलाज समझा जाता है।

मनौतियों का लाभ किनको?—इस तरह की सैकड़ों जगह हैं जहाँ के बारे में प्रसिद्ध है कि वहाँ मनौतियाँ मानने से मनो-कामना पूर्ण होती हैं। कोई समस्या आई नहीं कि मनौती मान ली। सभी को मालूम होगा कि जिसकी मनौती मानी जाती है उसमें देवता,साधु या फकीर के नाम पर यह वायदा किया जाता है कि हमारी यह इच्छा पूर्ण होगई तो हम उस जगह जा कर मन्दिर, देवस्थान, समाधि या मजार के दर्शन करेंगे तथा वहाँ की निर्धारित रस्में पूरी करेंगे।

ही रहता है। उसके नाम पर कुछ धंधेबाज होते हैं, जो उस देवता की ओर से मनौती की भेंट प्राप्त करते हैं।

मनौतियों का ही सहारा क्यों ? ये मनौतियाँ अन्धविश्वास के कारण मानी जाती हैं, जिनका कुछ लाभ नहीं है। हर तरह से नुकसान ही नुकसान है। जैसे सन्तान के लिए किसी देवी-देवता या सिद्ध बाबा की मनौती मानी जाती है। हर शिक्षित महिला जानती है कि सन्तान न होने का कारण शारीरिक है। पति या पत्नी किसी के भी शरीर में कमी हो सकती है, जिसके कारण सन्तान को जन्म देना सम्भव नहीं होता।

ये दोष चिकित्सासे दूर किये जा सकते हैं। शिक्षित परिवारों में इलाज कराया जा सकता है, पर अन्धविश्वास इस बुरी तरह मन को जकड़े रहता है कि लोग फिर भी मनौतियों के चक्कर में उलझ जाते हैं। इलाज के लिए डाक्टरों के पास जाते हुए भी देवी-देवताओं या सिद्ध बाबा की मनौतियाँ मानी जाती हैं। इलाज के साथ-साथ इस तरह के अन्ध विश्वास का सहारा क्यों लिया जाता है, इसका सामान्य उत्तर यही दिया जाता है कि शायद इससे भी कुछ फायदा होता है। इलाज हम करा ही रहे हैं, लेकिन मनौतियों से भी अगर कुछ फायदा होता हो तो हमें उसका फायदा भी मिल जाएगा।

'शायद' वाला यह विचार अन्धविश्वासी मन की उपज है। नहीं तो इलाज कराने के साथ-साथ मनौती मानने की क्या जरूरत ? लेकिन सैकड़ों वर्ष से इन तथाकथित धर्म के ठेकेदारों द्वारा विभिन्न प्रकार से किए प्रचार ने लोगों के मन को इतना प्रभावित कर रखा है कि आधुनिक दीखने का प्रयत्न करने के पश्चात् भी वे परम्परा से प्राप्त इन ढकोसलों से मुक्त नहीं हो सकते।

समय और धन की बरबादी—इस तरह के ढकोसलों में फंसे रहने के कारण उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किये जाने वाले परिश्रम में शिथिलता आ जाती है। उदाहरण के लिए कोई बीमारी है तो इलाज से ही ठीक हो सकती है। अब बीमारी के लिए मनौती मान ली गई तो इलाज की ओर से लापरवाही की जाने लगती है। उस दशा में बीमारी ठीक होने की जगह बढ़ती ही जाती है। बीमारी बढ़ने के साथ २ जहां-तहां मन्नतें मानने का चक्कर चलता ही रहता है। इसमें इलाज से भी अधिक धन और समय नष्ट होता ह।

आभार प्रकाशन किसी और को ! इलाज पर पूरा ध्यान देते हुए भी बहुत से परिवारों में मनौतियां मानी जाती हैं। बीमारी ठीक हो जाने पर उसका श्रेय मनौती को दिया जाता है और देवी-देवताओं के मन्दिरों में या मनौती वाली जगहों पर चादर, पूजा, भेंट, चढ़ावा आदि चढ़ाया जाता है। जिनका आभारी होना चाहिए वे तो एक किनारे रह जाते हैं और काल्पनिक शक्तियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है। इस तरह मनौतियों का अन्धविश्वास साधारण मानवीय गुणों को भी नष्ट करता है। मनौतियों के कारण आई कृतघ्नता आपसी सम्बन्धों में भी दूरी लाती है।

मनौतियों के अन्य प्रारूप—देवी-देवताओं के मन्दिरों व साधु-फकीरों की समाधियों व मजारों पर जाकर तो मनौतियां मानी ही जाती हैं, कथा पूजा के रूप में भी मनौतियों का अन्धविश्वास प्रचलित है। सत्यनारायण की कथा, सन्तोषी माता का व्रत, विभिन्न वारों और तिथियों के उपवास, किसी खास महिने में पर्व स्नान आदि कोई विशेष इच्छा की पूर्ति के लिए किए जाते हैं। किस तरह की इच्छा के लिए कौन सा उपवास किया जाए या किस तिथि पर उपवास किया जाए, इसके लिए अलग२

नियम विधान माने जाते हैं। इन नियमों और विधानों का कोई अर्थ नहीं होता। अन्ध-विश्वासों की एक परिपाटी चली आ रही रही है, वह परिपटी ही पूरी की जातीहै।

मनौतियों का अन्ध विश्वास समस्याओं का सही ढंग से सामना करने की जगह उनसे मुँह मोड़ कर बैठ जाने को ही मजबूर करता है। यह मजबूरी किन्हीं बाहरी कारणों से पैदा नहीं होती, अपने ही मन में बैठी हुई गलत मान्यताओं के कारण स्वयं पैदा की जाती है।

गण्डे-ताबीजों की निराली दुनिया—

गण्डे-ताबीज : कैसे-कैसे मुरीद !

गण्डा-तावीज बेचने वालों ने लोगों के अन्धविश्वास की नब्ज पकड़ ली है। निर्धनता और निरक्षरता जहाँ ग्रामीणजनता के अन्धविश्वास का मूल हैं, वहां शहरवासियों के अन्धविश्वास की जड़ है, आलस्य और आत्म-दुर्बलता। गण्डे-तावीज से फायदा होता है—गण्डे-तावीज बेचने वालों का। आइये, आपकी मुलाकात करायें, गण्डा-तावीज बँधवाने वालों से !

मेरे एक परिचित विद्यार्थी आई० ए० एस० परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। एक दिन मुझे मिले तो देखा कि उनकी बांह पर काले धागे में बँधा तावीज है। बात हैरानी की थी। आई० ए० एस० जैसी महत्वपूर्ण परीक्षा विद्यार्थी तावीज के बलबूते पर पास करता है या कड़ी मेहनत से ? मेरे पूछने पर उसने अत्यन्त आत्मविश्वास से उत्तर दिया, 'तावीजसे आत्मिक बल बढ़ताहै।'

हमारे देश के कई खिलाड़ी गंडा या तावीज बांधे दिखाई

दगे। एक सुविख्यात महिला धावक ने बताया कि वह तावीज पहनकर स्पर्धा में उतरती है, तो अवश्य जीतती है। 'शारीरिक चुस्ती या स्वस्थ शरीर से भी जरूरी आत्मबल है,जिसे बढ़ाने के लिए मैं तावीज का सहारा लेती हूं,' उसने बताया।

ज्येष्ठ-श्रेष्ठ नेतागण भी गण्डों को चमत्कारी शक्ति से परे नहीं, किसी की बांह पर 'जगन्नाथप्रसन्न' की तांबे की संकरो पट्टी दोखेगी या किसी के गले में हनुमान् की प्रतिमा होगी। इन महानुभावों की कार्यशीलता में पर्याप्त आकर्षण हो, चाहे न हो, पर काले डोरे में बंधी यह मन्त्रित प्रतिमा इन्हें उन्नति के शिखिर पर अवश्य ले जाएगी, ऐसा पक्का भरोसा इन्हें रहता है।

प्रश्न उठता है कि क्या सचमुच ही गंडे-तावीज इच्छित साध्य की प्राप्ति में सहायक होते हैं ? क्या वास्तव में जिस कामना से ये बांधे जाते हैं, वे उसकी सिद्धि प्राप्ति में मदद करते हैं ? आइये, इसका भी जायजा लें।

आई० ए० एस० का परीक्षाफल निकला और हमारा गण्डाधारी मित्र उसमें असफल रहा। वह सुविख्यात महिला धावक भी हर प्रतियोगिता नहीं जीत पाई और राजनीति के उतार,चढ़ाव का तो कहना ही क्या ! उनसे तो सभी परिचितहैं।

'चिन्ता क्यों ? परीक्षा में यश लेना हो, विवाह-सूत्र में बंधना हो, इन्टरव्यू में चयन होना हो,तो हमारी नवरत्न अंगूठी पहनिए।'इस तरह के विज्ञापन आपने पढ़े होंगे। भला अंगूठियां पहनकर इण्टरव्यू में चयन होता हो तो सभी अंगूठियां पहने इण्टरव्यू देने जायें। सभी परीक्षा में उत्तीर्ण हों, दुनिया में दुःख-दर्द का नामोनिशान न रहे और सुख-समृद्धि की नई दुनियां अस्तित्व में आ जाये।

जहां कहीं गण्डे-तावीजों से काम हुआ भी हो, तो यह समझ लेना चाहिए कि वह उस इन्सान की मेहनत का मीठा फल

है। गंडे-तावीज का असर नहीं या यदाकदा केवल संयोगवश ही अपूर्ण प्रयासों के बावजूद काम बन जाता है। याद रहे ऐसी घट-नायें ज्यादा से ज्यादा दो प्रतिशत होंगी। गण्डे-तावीजों का प्रयोग बेशक खूब होता हो, प -लिखे लोग इन्हें अपनाते हों, लेकिन ये उपाय कितने कारगर हैं,कितने नहीं यह तो इतना सब पढ़ने के बाद काफी स्पष्ट होगया होगा। प्रश्न उठता है :

फिर गण्डे क्यों खरीदे जाते हैं ?

मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य के पास जो वस्तु न हो, उसे पाने की उत्कट इच्छा स्वाभाविक है। जिसके पास धन की कमी है, वह अमीरी के सपने देखता है या बेकार युवक स्वयंको बड़े अधिकारीके रूपमें देखना चाहता है। निर्बुद्धि विद्यार्थी की कामना रहती है कि वह सबसे अधिक अङ्क प्राप्त करें। ये लोग इसके लिए मार्ग ढूंढ़ने का बजाय अपनी इच्छा झटपट कैसे पूर्ण हो. इसका हल ढूंढ़ते हैं। यशोशिखर का मार्ग बहुत कठिन हैं, उसके लिए साधना की जरूरत होती है।

ऐसे में बिना कोई कष्ट उठाये, परिश्रम किये गंडे-तावीज द्वारा अभिलाषा पूर्ति हो रही हो, इससे बढ़कर और क्या होगा? बाँध लिया गंडा और हो गया काम। यानी मनुष्य कष्ट की राह छोड़ आसान तरीका अपनाते हैं। जो व्यक्ति कठिन श्रम करने वाला है, वह शायद ही इस तरफ भटकता दीखेगा।

गण्डों का लाभ किसे होता है? गण्डों से लाभ होता है, गंडे बेचने वालों का। मनुष्य की मानसिक और शारीरिक कम-जोरियों का लाभ उठाकर ये अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं। गण्डे को मन्त्र शक्ति से भरा बतलाकर ये लोग इसके पाँच से लेकर पाँच हजार तक वसूल कर लेते हैं। दरअसल गंडा होता है, महज एक धागा या किसी देवी-देवता का चित्र। २५-३० पैसे

के एक गण्डे के पीछे इनके कम से कम साढ़े चाररुपये बन गये। गंडा बेचने वाला गेरुये वस्त्र पहने हो तो सोने में सुहागा। ये लोगों के सामने श्लोकादि पढ़कर, धूप-दीप दिखाकर विधिवत् गंडा या तावीज बांध देते हैं। स्पष्ट है कि इस पूजा-अर्चना का खर्चा भी जोरदार बैठेगा।

चूंकि गंडा-तावीज बेचने वालों ने लोगों के अन्धविश्वास की नब्ज पकड़ ली है, इसलिए ये अपने गंडों का खूब प्रचार करते है। बड़े से बड़े अखबार या पत्रिका में तरह-तरह के रत्न और तावीज शान से चमकते हैं। लोग खरीदते भी इन्हें अनन्य विश्वास से हैं। नकली साधु, अघोर शक्ति के झूठमूठ के उपासक, इन सबका मतलब पैसे ऐंठने से है। भक्ति से ज्यादा उनका मन लगता है, दक्षिणा प्राप्ति में।

इस प्रवृत्ति की जड़—हमारे अधिकाँश देशवासी अनपढ़ हैं। लिखना-पढ़ना छोड़िए, कई एक तो अपना हस्ताक्षर तक नहीं कर सकते। छूत की बीमारी जैसे महामारी या चेचक के टीके लगवाने से ये लोग हिचकिचाते हैं। बड़ीमाता को नारियल प्रसाद चढ़ाने से चेचक की बीमारी नहीं होती, उनकी यह धारणा अभी तक बनो हुई है। माँ-बच्चे को उचित आहार, दवाइयाँ देना ये नहीं जानते। कोई दुविधा आती हो तो झाड़-फूंक का सहारा लेकर गंडे-तावीज बांध लिये जाते हैं।

हमारा देश गरीबों का देश है। छोटे गाँवों में जाने के लिए डाक्टर इन्कार करते हैं, जिससे हमारे दुर्गम गाँवों में बसने वाले इनकी सेवाओं से वंचित रहते हैं। अतः हमारे भोले-भाले देशवासी गंडे-तावीजों से, जो सस्ते में मिल जाते हैं, मोहित हो जाते हैं। देहातों में सुनी-सुनाई बातों पर अधिक भरोसा किया जाता है। जहाँ एक ने किसी गण्डे की महत्ता बघारनी शुरु की नहीं कि सभी ने अपने बुरे समय में वैसा ही गण्डा खरीद

लिया। ऐसे गण्डे खासकर बच्चों के गले या बाहों पर दीखेंगे; गावों में बाल-मृत्यु का अनुपात बहुत ज्यादा है। वहाँ शीतला का गण्डा बड़ा आम है।

निर्धनता व निरक्षरता जहाँ गाँव वालों के अन्धविश्वास का मूल है,वहाँ शहरियों के अन्धविश्वास की जड़ है, आलस्य व आत्म-दुर्बलता। गतिशून्य,क्रियाशून्य आलसी मनुष्य भगवान् का नाम लेकर बैठ जाता है। वह नहीं जानता कि भगवान् उसी की मदद करते है, जो स्वयं अपनी मदद करता हो।

कुचक्र से कैसे बचें? हमारे शत्रु बाहर नहीं, बल्कि हमारे अन्दर हैं। हम यदि अपना व्यक्तित्व सुधारने का यत्न करें, तो इनके चंगुल से बचेंगे। यदि हम जान लें कि हमारे प्रयत्न ही हमें सफल बनायेंगे, तो बेहतर है कि हम अधिकाधिक परिश्रम करें। स्वयं कतृत्व एवं विवेक को बढ़ावा देना उचित होगा।

ध्यान देने योग्य एक और बात यह है कि कोई भी मनुष्य हमेशा एक ही स्थिति में कभी नहीं रहता। जीवन की ओर परिपक्व, प्रगल्भ दृष्टिकोण से देखना मानव के लिए हितकारी होगा। जिसके पास जितनी सम्पत्ति है, उससे सन्तोष करना नितान्त आवश्यक है। इसका मतलब यह नहीं, कि लोगों में महत्वाकाँक्षा न हो। महत्वाकाँक्षा ही नहीं होगी, तो प्रगति असम्भव है। लेकिन यश कितनी मात्रा में मिलेगा यह आपके प्रयत्न तथा अन्य परिस्थितियों पर निर्भर रहेगा। हो सकता है कि आप यथासम्भव प्रयत्न करें पर फल न मिले। ऐसी स्थिति में सतत प्रयत्नशील रहने के साथ ही सन्तोष-समाधान जीवन कोसन्तुलित बनाए रखनेके लिए आवश्यक है। --माधुरी खिमये

●

अन्ध विश्वासों से घिरे ये पर्व और त्यौहार !

भारतवर्ष में वर्ष भर में जितने पर्व और त्योहार मनाये जाते हैं उतने शायद ही संसार के किसी अन्य देश में मनाये जाते हों। प्रत्येक पर्व का अपना इतिहास है। कुछ पर्व हमें त्याग, बलिदान, दया, शान्ति, उपकार, उदारता और मानव की एकता का पाठ पढ़ाते हैं, तो कुछ ऐसे भी पर्व हैं जो देश में होने वाले ऋतु परिवर्तनों की ओर संकेत करते हैं। वसन्त पंचमी का पर्व इसी तरह का है। पंजाब और हरियाणा में मनाया जाने वाला वैशाखी का त्यौहार ऋतु-परिवर्तन से भी सम्बन्ध रखता है और धार्मिक ऐतिहासिक घटनाओं से भी। परन्तु ये पर्व और त्यौहार पनप आये अन्धविश्वासों और जहरीली मान्यताओं के कारण अपनी गरिमा खोते जा रहे हैं। —सम्पादक

एक पत्रिका में एक जगह लिखा था, "जो व्यक्ति व्रत, उपवास (निराहार व निर्जला) रहता है, वह वर्ष भर सुखी रहता है। उसे किसी तरह की व्याधि नहीं सताती हैं।"

आश्चर्य हुआ लेख पर जिसने सुखी रहने तथा किसी भी तरह की व्याधि से छुटकारा पाने का इतना सरल और सुगम रास्ता सुझाया था। काश ! लेख के रचयिता ने इस बात को लिखते समय उन लोगों को ध्यान में रखा होता जिनका लगभग प्रत्येक दिन उपवास में बीतता है और वे कितने स्वस्थ और सुखी रहते हैं।

अब जरा छठी व्रत को ही देखिये, ऐसी मान्यता है कि जिन स्त्रियों को पुत्र रत्न चाहिए वे अपनी मनोकामना को इस व्रत को निराहार, निर्जला रहकर पूरा कर सकती हैं, जबकि

सभी जानते हैं कि पुत्र रत्न की प्राप्ति स्त्री-पुरुष के सम्पर्क से होती है न कि छठी का व्रत रखने से।

इसी प्रकार, जीवित पुत्रिका व्रत में स्त्रियाँ वरियार (एक विशेष पौधा) से यह सन्देश श्री राम के दरबार में भिजवाती हैं कि अमुक व्यक्ति की माँ का 'जीवित पुत्रिका व्रत' है, उसका कल्याण करें। इस पर भले ही किसी धर्मान्ध व्यक्ति को कोई आपत्ति न हो, एक बुद्धिजीवी कदापि यह स्वीकार नहीं कर सकता कि उस पौधे ने राम के पास इस आशय का सन्देश पहुँचाया होगा ! भला पौधे कब से सन्देश कहने लगे ? ये यहीं तक सीमित नहीं बल्कि कुछ पर्वों में तो पेड़-पौधों की परिक्रमा तक की जाती है।

हमारे त्यौहार भी अन्धविश्वासों से मुक्त नहीं हैं। कृष्ण-जन्माष्टमी व राम नवमी हिन्दुओं के प्रिय त्यौहार हैं। यह त्यो-हार क्रमशः कृष्ण व राम के जन्म के हर्ष में प्रति वर्ष मनाये जाते हैं, जिनमें प्रायः अधिकाँश पुरुष व स्त्रियाँ निराहार तथा व्रत रखते हैं। क्या विडम्बना है ! घर में बच्चे के जन्म के समय उत्सव मनाया जाता है, पकवान बनते हैं,लेकिन इन त्यौहारों में बजाय उत्सव मनाने के सभी उपवास रखते हैं, मानो गम मना रहे हों।

हिन्दू समाज में लक्ष्मी धन-धान्य, कल्याण और सौन्दर्य की प्रतिमा मानी जाती हैं। इनकी प्राप्ति के लिए दीपावली के एक दिन पूर्व दरिद्रता भगाने की परम्परा है। अगर इसी तरह भाग ! भाग ! कहने से दुःख-दरिद्रता भाग जाती है तो फिर गरीबी व दरिद्रता हटानेके लिए करोड़ों रुपयों की योजना बनाने व क्रियान्वन की क्या आवश्यकता ?

एक ओर मानव चाँद पर जाने की योजना बना रहा है, दूसरी ओर ये अन्धविश्वास फैलाने वाले ज्योतिषी और पुरोहित

वर्ग संयोग मात्र के बल पर होने वाली दुर्घटनाओं को कर्मण्यता से ऊँचा साबित करने में लगे हुए हैं और भ्रान्तियाँ फैलाते हैं जिससे अन्धविश्वास रूपी पौधा पल्लवित व पुष्पित हो रहा है।

आज आवश्यकता है हर सड़ी-गली तथा अवैज्ञानिक बात का बहिष्कार करने की तथा उन षड्यन्त्रकारी पुरोहित वर्ग को बेनकाब करने की। नहीं तो हजारों कानूनों और स्वतन्त्रताओं के बाबजूद भी हम मानसिक गुलाम बने रहेंगे और अन्धविश्वास तथा विषाक्त मान्यताओं से कभी मुक्ति नहीं पा सकगे।

—विजय प्रकाश श्रीवास्तव

...आशीर्वाद जो कभी फले नहीं !

वर्तमान भारतीय समाज का ढांचा कुछ इस प्रकार का बन गया है कि भारतीय नारी चाहे कितनी पढ़-लिख जाए और उन्नति कर जाए, फिर भी कुछ बातें ऐसी होती हैं जिनसे वह समझौता नहीं कर पाती। ये बातें उसके हृदयको कचोटती रहती हैं। वह कुण्ठाओं से घिर जाती है और धीरे २ अपनी विचार-शक्ति को छोड़कर देश की रूढ़िवादी मान्यताओं के सामने झुक जाती है। तर्क की अपेक्षा आस्था का पलड़ा भारी बैठता है। वह आँख मूँदकर आस्था के मार्ग पर चल पड़ती है। पर जब आस्था या अन्धविश्वास उसे एक धोखा मात्र प्रतीत होता है, तब उसका हृदय टूट जाता है और तब वह अपनी रूढ़िवादी मान्यताओ को जड़ से उखाड़ना चाहती है। इन्हीं मान्यताओं में से एक है—देवी-देवताओं या साधु-सन्तों के वे आशीर्वाद जो कभी फलते नहीं ! आइये, इसी सन्दर्भ में निम्न घटना का अवलोकन करें। —सम्पादक

वीणा खूब पढ़ी लिखी प्रगतिशील विचारों की महिला है और बहुत ऊँचे पद पर आसीन है। उसके चार पुत्रियाँ हैं। अपनी पुत्रियों से वह बहुत सन्तुष्ट है। एक बार वह पूरे परिवार के साथ अपने कुल गुरु के दर्शन करने गई। गुरुमहाराज ने दर्शन दिये। बातचीत की और चारों बेटियों को ठीक दिशा में प्रगति करने का आशीर्वाद दिया।

चलते समय वीणा ने भी झुककर गुरु महाराज के चरणों में प्रणाम किया तो उन्होंने उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया, 'तेरी मनोकामना पूरी होगी।' वीणा अपने जीवनमें जिस चीज की कमी महसूस करती थी उस पर उसका ध्यान तुरन्त चला गया और उसका मुख लज्जा से लाल होगया। कुछ समय बाद जब वीणा को अपनी इच्छा पूरी होने का आभास हुआ, तब उसने भजन-कीर्त्तन और बड़ी-बूढ़ियों की बातों में रस लेकर उनके कथनानुसार चलना शुरु कर दिया। 'चार बेटियों के बाद नाल ही बदल जाती है,' इस बात पर उसे दृढ़ विश्वास हो गया। प्रसव के समय उसकी दशा बहुत खराब हो गई। कई घण्टों बाद जब होश आया तो उसने अपने बच्चे के विषय में पूछा। जब उसे नर्स द्वारा मालूम हुआ कि इस बार भी बेटी हुई है तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ। और फिर उस बच्ची का देख निढाल होकर गिर पडी।

गुरु महाराज का आशीर्वाद कभी गलत नहीं हो सकता। यह कैसे होगया और इसी सोच में वह बीमार पड़ गई।

अब गुड़ियासी बिटिया घर भर का खिलौना है, पर ऐसे साधु-सन्तों पर से उसकी आस्था उठ गई। ●

पंचांग के गुलाम

"आज शुक्रवार के दिन नई झाड़ू क्यों निकाली, बहू ? तुमको कई बार समझा चुकी हूँ, पर तुम तो इस घर को भरापूरा देखना ही नहीं चाहतीं।"

"मांजी, मैं अपने घर की उन्नति क्यों नहीं देखना चाहूँगी ? आपने शुक्रवार को झाड़ू खरीदने के लिए मना किया था। मैंने सोचा, घर में रखी नई झाड़ू को काम में लेने शायद कोई हर्ज नहीं होगा," प्रमिला करीब-करीब रोते हुए बोली।

"लो, अब रोना शुरू कर दिया। बहू, शुक्रवार और मंगलवार तो देवी के दिन हैं। तड़के उठ कर, नहा धोकर देवी की स्तुति में अन्नपूर्णाष्टकम या सौन्दर्यलहरी गाना तो दूर रहा, अब आती हुई लक्ष्मी को भी दूर भगा दे।"

प्रशांत आधी रात को दौरे से लौटा था और चाहता था सुबह देर से उठे, पर मांजी के चिल्लाकर बोलने से वह एका-एक जाग उठा। आँखें मलता हुआ वह वहीं पहुँच गया। उसे देख कर मांजी का स्वर मुलायम पड़ गया।

अच्छा-अच्छा, अब जल्दी से स्नान कर ले। गलती तो इनसान से हो जाती है। मैं बड़ी हूँ तो किसलिए ? यदि मैंने आज तुम्हें नहीं बताया तो सब यही कहेंगे कि देखो सास के होते हुए भी बहू को कुछ नहीं सिखाया गया।" फिर आवाज को थोड़ा धीमा करते हुए बोलीं, "मां बताये तो कोई दोष नहीं देगा।"

मांजी हमेशा से ही अन्धविश्वासी रही हैं। पिताजी जब दफ्तर जाने के लिए घर से बाहर निकलते तो मांजी दरवाजे पर खड़े होकर बराबर देखती रहती थीं कौआ दायें से बांयें,उढ़ा या बायेंसे दायें बिल्ली ने रास्ता काटा या सीधी चली गई, सामने से कोई लकड़ी वाला आया या खाली घड़ा लिए हुए ? उस समय तो पिताजी इसे अपने ऊपर पत्नी

का असीम प्यार और पतिभक्ति ही समझते रहे दोनों बहिनें भी मां को देखा-देखो यह सब सीख गईं। उनके मन में इन बातों का पैठ जाना स्वाभाविक था।

बड़ी दीदी के पहले प्रसव का तमाशा प्रशांत को अभी तक याद है। दीदी को तकलीफ शुरू ही हुई थी कि मांजी ने पंचांग उठा लिया। अगले कुछ घण्टों के बाद रोहिणी नक्षत्र का आगमन होना था। बस उन्होंने दीदी को हस्पताल ले जाने को जल्दी मचानी शुरू कर दी। पिताजी बोले, 'भई, अभी तो दर्द ऐसा नहीं है कि उसे फौरन हस्पताल ले जाया जाए। हस्पताल तो पास ही है।

पर मां तो कुछ और ही शंका के कारण परेशान थीं। उनका कहना था कि कुछ घण्टों के बाद रोहिणी नक्षत्र का उदय होगा। रोहिणी में लड़का पैदा हो तो मामा का दुश्मन पैदा होता है। कृष्ण जी ने भी रोहिणी नक्षत्र में जन्म लिया था और इसीलिए उन्होंने मामा कंस का संहार किया था।

पिताजी जी भर के हँसे। बड़ी मुश्किल से हँसी रोककर बोले, "अरे भई, यदि उसे हस्पताल ले जाने से ही बच्चा तुम्हारे मनचाहे समय में हो जाए तो सब अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार हस्पताल न चले जाएं? तुम हर काम के लिए समय निर्धारित कर सकती हो, पर जीवन और मृत्यु का समय तुम या तुम्हारा पंचाग निर्धारित नहीं कर सकता।"

मां कुछ बोलतीं, उससे पहले ही वह गम्भीर होते हुए बोले, "कंस ने जो अत्याचार किये थे उसकी सजा तो उसे मिलनी ही थी कृष्ण जी तो एक जरिया बन गये थे।"

पर मांजी नहीं मानीं और अमृतयोग, सिद्धयोग आदि देखकर दीदी को हस्पताल ले गईं। डाक्टरनी से भी जल्दी करने को कहने लगीं। डाक्टरनी हँसकर बोली, "मांजी, इतनी उतावली है आप

नानी बनने की ? नया जीव तो अपने समय में ही धरती पर आएगा। वैसे भी अभी जल्दी आने के आसार नहीं हैं।"

डाक्टरनी अन्य मरीजों के काम में लगी रही। मांजी ने दो-तीन बार फिर टोका। अब तो वह चिढ़ गई, "आप बाल-बच्चे वाली होकर भी अनुभवहीन व्यक्तियों की तरह क्यों बात कर रही हैं ? इससे तो अच्छा है कि आप अपनी बेटी को कहीं और ले जाएं।"

प्रशांत के भानजे को रोहिणी नक्षत्र में पैदा होना था सो वही हुआ। पिताजी और वह दूध लेकर पहुँचे तो मांजी ने प्रशांत को बाहर ही रोक दिया। उनका कहना था कि यदि वह बच्चे को देख लेगा तो उसके लिए हानिकारक होगा। ग्यारहवें दिन ब्राह्मण आकर जब 'स्वस्त्ययन' कर ले तब कहीं वह अपने नन्हे भानजे को देख सकता है। प्रशांत का सारा उत्साह खत्म हो गया। पिताजी भी गुस्से में आ गए। पर समय ऐसा था कि अधिक बहस करना ठीक नहीं था।

पिताजी मांजी की कई बातों की हँसी उड़ाते थे, पर गम्भीर रूप से उन्हें कभी नहीं टोका था। पर इस घटना के बाद तो उनको इन खोखले विचारों पर इतना गुस्सा आने लगा कि उन्होंने मांजी की इन बातों की परवाह करना ही छोड़ दिया। अकसर पिताजी और मांजी में इन बातों को लेकर झगड़ा हो जाता। कभी-कभी गुस्से में पिताजी बिना भोजन किये ही दफ्तर चले जाते। मांजी भी उस दिन बिना खाये रहतीं। शाम को पिताजी के लौटने पर अन्न अपमान न करने की दुहाई देकर उन्हें जबरदस्ती खिलातीं, फिर खुद खातीं।

पिताजी भी भूख से बेहाल तो होते ही थे। अतः थोड़े से नानु-कर के बाद खा लेते। हर बार मांजी के विचारों को बदलने के लिए दिल को कड़ा करने पर भी मांजी के झक्कीपन के आगे उनकी एक न चलती। भाई-बहन भी पिताजी का पक्ष लेते पर मांजी के विचारों में तिल बराबर भी फर्क न पड़ता। मांजी रोते-रोते पिताजी से कहतीं, "नास्तिक मत बनो. अगले जन्म का भी कुछ ख्याल करो।"

पिताजी दुःख और लाचारी से हँसते हुए कहते, "यह जन्म तो तुमने इन ढकोसलों के चक्कर में खराब कर ही लिया है। अगले जन्म की अब किसे इच्छा है? पर एक बात याद रखना, मेरी मृत्यु पर यह दिखावा हरगिज न हो। मेरी वसीयतमें लम्बी-चौड़ी जायदाद सम्पत्ति या के बंटवारे का लेखा-जोखा तो नहीं होगा। पर यह इच्छा जरूर जाहिर कर दूंगा कि मेरा कार्यक्रम अत्यन्त साधारण तरीके से हो। ये ब्राह्मण और पण्डित तो लूटेंगे और तुम जैसे लोग लुटने में ही अपनी शान और जन्म का सार्थक होना समझते हो।"

मांजी-ऊंचो आवाज में रोने लगतीं, "मैं तो सबके भले के लिए इतना करती हूँ और आपके मुँह से सिवा अपशकुन के और कुछ निकलता ही नहीं है। आप ही यदि इस तरह की बातें करेंगे तो ये बच्चे क्या खाक मेरी बात पर ध्यान देंगे?"

"मैं तो तुमको बदल नहीं सका। शायद ये बच्चे तुम्हारे विचार बदल सकें।

कुछ ही दिनों बाद पिताजी की सचमुच मृत्यु हो गई। लगातार दिल के दो दौरे पड़े और वह चल बसे। पिताजी को भी शायद अंदाज नहीं था कि उनकी मृत्यु इतनी अप्रत्याशित और शीघ्र होगी। वरना शायद वह वसीयत में अन्तिम इस इच्छा को लिख जाते। मांजी की इच्छा को देखते हुए परिवार वालों को पिताजी का मृत्यु पर सारे रिवाजों को मानना पड़ा। मांजी से बहस करना या कुछ कहने सुनने का न मौका था, न किसी का दिमाग ही सन्तुलित था। पिताजी की अचानक मौत ने दोनों भाइयों को हिला दिया था। फिर नातेरिश्तेदार ऐसे समय में काम न आएं, यह भी कोई बात हुई भला। सब अपनी-अपनी जानकारी के अनुसार मरणोपरान्त रीतिरिवाजों पर रोशनी डाल रहे थे। गोदान से स्वर्णदान तक जितने प्रकार के दान हो सकते हैं वे सब मांजी के कहने पर किए गये।

बड़े भैया प्रशांत से बोले थे, "भाई, यह सब क्या हो रहा है,

इतना खर्च मैं कैसे बरदास्त कर सकता हूँ ? इन सबके बिना पिताजी की आत्मा को क्या शान्ति नहीं मिल सकती ? हमें अपनी जेब भी तो देखनी चाहिए।"

प्रशांत बेचारा क्या कहता ? वह भी जानता था कि भैया को इतना वेतन नहीं मिलता कि अन्टशन्ट पैसा खर्च कर सकें। भैया धीरे से एक-दो बार प्रशांत से बोले भी कि मां के पास कुछ रुपयेहों तो पूछ लो पर न प्रशांत की हिम्मत हुई, न भैया की। ऐसे समय में मांजी से पूछना खराब लगता। नाते-रिश्तेदार भी क्यों चूकते ? वे जरूर कहते "ऐसे समय भी लड़के काम न आएं तो क्या फायदा इन लड़कों के होने का।"

भैया ने पता नहीं कहाँ से उधार लेकर पिताजी को 'स्वर्ग' पहुँचाने का सारा इन्तजाम कर दिया। वह तो अच्छा हुआ कि प्रशांत को जल्दी अच्छी नौकरी मिल गई और दोनों भाइयों ने मां और छोटी बहन का भार आपस में बाँट लिया।

\+ +

प्रशांत की शादी में उर्मिला के पिता ने बेटी व दामाद को कशमीर जाकर कुछ दिन बिताने के लिए अलग से चैक दिया था। प्रशांत को मुशकिल से १५ दिन की छुट्टी मिली। फिर भी वे दोनों खुश थे कि कम से कम एक दूसरे को समझने का कुछ तो मौका मिलेगा। प्रमिला ने बड़े चाव से तैयारी की प्रशांत ने टिकट बुक करा कर जब मांजी को बताया तो वह पंचांग ले कर बैठ गईं। अष्टमी, नवमी, दिशाशूल और न जाने क्या-क्या कहकर उनकी जाने की तारीख ३ दिन आगे करवाने को कहने लगीं। वहां से आने की तारीखें भी ऐसी बता रही थीं कि या तो प्रशांत अपनी पत्नी को लेकर निश्चित तारीख से तीन-चार दिन पहले लौटे या फिर दो-तीन दिन बाद।

छुट्टी उसकी बढ़ नहीं सकती थी। पन्द्रह दिन में छः-सात दिन की कटौती अखरने वाली थी। फिर कारण भी तर्कसंगत नहीं लग

रहा था। प्रशांत ने मां की बात को हँसी में टालना चाहा। बुक किये टिकटों को रद्द करवाकर किसी और दिन का लेना भी कम झंझट का काम नहीं था। प्रमिला को बुरा लगना स्वाभाविक था। उसने मांजी के सामने ही कह दिया, "न ही जाएं तो अच्छा है। इतने पैसे केवल छः सात दिन के लिए खराब करने की क्या जरूरत है ?"

पहले मांजी भी उसकी बात का सही अर्थ न समझकर बोलीं, "हां, बहू, और नहीं तो क्या ? पहले कहाँ शादी होते ही मियांबीवी हनीमून मनाने जाते थे ? इतने पैसों को सोने जेवर और साड़ियों में लगाएं तो शान ही कुछ और हो जाए।"

प्रमिला अपना पासा उलटा पड़ता देख जल-भुन गई थी और आंसू भरी आंखों से थोड़ी देर सास को देखकर अन्दर कमरे में चलदी थी। उसकी उलाहने वाली दृष्टि देखकर मांजी समझ गई थीं और प्रशांत से बोली थीं, "भाई, तुम लोगों की जो इच्छा हो करो। मैं तो तुम दोनों की भलाई के लिए ही कहती हूँ। मैं ठहरी पागल बुढ़िया पढ़ी-लिखी बहू को क्या बता सकती हूँ ?"

प्रशांत बेचारा क्या करता ? पत्नी के आगे न मां का मान घटा सकता था, न मां की ऊटपटांग बातें मानकर पत्नी को नाखुश कर सकता था। किसी तरह प्रमिला को मनाकर माँ की कही तारीख पर वे निकले, लेकिन लौटा तो खुद की तय की हुई तारीख पर ही। घर आकर मांजी से उसने बहाना बना दिया कि उधर कहीं लाइन पर ट्रेन उलट गई इसलिए गाड़ियाँ ठीक से नहीं चल रही थीं। बस, मांजी ने दोनों की नजर उतारी और बोलीं, "देखा न, यदि दिन देख कर न जाते तो पता नहीं क्या अनर्थ हो जाता।" प्रमिला और प्रशांत यह सुनकर दबी नजरों से एक-दूसरे को देख कर मुसकरा दिये थे।

समय बीतता रहा और समय के साथ २ प्रमिला भी समझ गई कि घी सीधी उंगली से नहीं निकलेगा। प्रशांत और उसके बीच समझौता हो गया और वे दोनों खुश रहते हुए मांजी को नाराज न

करने की कोशिश करते। वैसे छुटपुट बहस और तीनों में से एक का नाराज होना चलता रहता। पर इतनी नौबत कभी न आई कि एक-दूसरे के लिए मन में कड़वाहट भर जाए। पर पिछले कुछ महीनों से प्रमिला उखड़ी-उखड़ी सी रह रही थी और मांजी के प्रति लापरवाही दिखा रही थी। बात ही ऐसी थी कि किसी का भी दिल वितृष्णा से भर जाता।

हुआ यह कि बड़े भैया के तीसरे लड़के को अपेंडिक्स का तेज दर्द हुआ। डाक्टर ने कहा कि लड़के को बचाना है तो उसका तुरन्त आपरेशन कराना होगा। पर माजी पंचांग लेकर अपना राग अलापने लगीं, फलां दिन अच्छा है और फलाँ दिन में फलाँ समय पर आपरेशन करना उत्तम रहेगा। उनकी इस गणना से अमूल्य समय नष्ट होता जारहा था। आखिर आपरेशन से पहले ही लड़का इस दुनियां से कूच कर गया। डाक्टर ने मांजी पर हिकारत भरी नजर डाली और दाँत पीसते हुए बोला, "आप हा इसकी खूनी हो।"

भैया-भाभी मुँह से तो कुछ न बोले, पर मांजी के प्रति उनका व्यवहार एकदम रूखा हो गया। वे जल्दी ही दूसरी जगह चले गए। तभी से प्रमिला के मन में उन के प्रति घृणा बढ़ने लगी।

उस दिन स्नान घर में जाकर प्रमिला रोई नहीं वरन् सोच में डूब गई। आखिर उसने पिता के घर जाने का फैसला कर लिया। वह अपने बच्चे को इस सड़ी-गली मान्यताओं के वातावरण से बचाना चाहती थी। इसीलिए उसने अपने बच्चे को अपने नाना के यहां भेज दिया था

प्रशांत और मांजी ने उसे खूब मनाया। और इस पर वह बोली, यदि "मांजी का रुख इसी तरह रहा तो मैं शायद यहां कभी न आऊं। बड़ों का आदर तभी किया जा सकता है, जब उनके विचार उदार और हृदय विशाल हों। यहाँ तो हमारी जिन्दगी सिर्फ पंचांग के अन्दर सुरक्षित है। असली जिन्दगी तो वह है जिसे हम मर्यादा-पूर्वक अपनी खुशी से जिएं और दुःख के समय हिम्मत न हारें। यदि

पंचाग देख-देख कर ही कार्य करेंगे तो फिर दुःख तो आयेंगे ही नहीं। इसको मनुष्य की निश्चिन्तता कहा जा सकता है या डरपोक और दब्बूपन।"

फिर मांजी और प्रशांत के पैरों की धूल माथे पर लगाते हुए बोली, "वैसे मुझे मांजी से कोई शिकायत नहीं है। मुझे चिढ़ है तो उनकी सड़ी-गली मान्यताओं से। मैं नहीं चाहती कि इसका विष हमारे बच्चे में भी घर कर जाए।"

वह सूटकेस उठा कर चलने लगी। प्रशांत को होश आया। उसने सूटकेस प्रमिला के हाथ से ले लिया और उसके आगे हो गया। दो कदम चलकर मांजी की ओर देखकर बोला, माँ, मैं इसे गाड़ी में बिठाकर आता हूँ। बस, फिर मैं ही रह जाऊँगा तुम्हारे साथ। रोज पंचांग देख-देख कर दफ्तर भेजना। पर पहले यह बता दो कि मेरा मरणयोग कब....।"

प्रमिला ने दौड़कर अपनी हथेली से उसका मुँह बन्द कर दिया।

मांजी फफक कर रोने लगीं। थोड़ा रोना रुक जाने पर प्रमिला का आंचल पकड़ कर बोलीं, "बेटी, मुझे पगली समझकर माफ कर देना। एक बेटे को पुत्रशोक का दुःख दिया। अब दूसरे के घर को बरबाद करने का कारण नहीं बनूँगी।"

प्रमिला और प्रशांत स्तब्ध खड़े मांजी को देख रहे थे। मांजी तेजी से अन्दर गईं। और यह क्या। उनके हाथ में फिर पंचांग था। प्रमिला बिदकती तभी वहाँ एक अनोखा दृश्य उपस्थित हुआ। मांजी ने पंचांग को फाड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। उनकी आँखों आंसू बह रहे थे पर चेहरे पर हँसी थी।

अब वह पंचांग के गुलाम न थे। खुशी उनकी अपने हाथों थी और दुखदर्द आपस में बंटे हुए।

शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका

तपोभूमि

आर्य जगत् में सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक—

शरीर मन और आत्मा को उन्नत करने वाले, महिलाओं और बालोपयोगी सामग्री से सज्जित, कविता-कहानी एकांकी, लघु कथा और विवेचनात्मक लेखों से युक्त—

इस सात्विक प्रकाश को अपने परिवारों में प्रवेश कराइये।

वार्षिक मूल्य ५) रु० मात्र

४०० पृष्ठों के वृहद् विशेषाङ्क सहित होता शुल्क २५) रु० मात्र।

द्रष्टव्य–होतासदस्य को जो २५)रु० वार्षिक या २५०)रु० एक बार में देने पर बन सकते हैं, विशेषांक सहित 'तपोभूमि' के अतिरिक्त सत्य प्रकाशन के प्रकाशनों पर २५ प्रतिशत कमीशन मिलेगा तथा वे प्रकाशन समिति के सदस्य माने जायेंगे। तपोभूमि के वृहद् विशेषांक—'शुद्ध रामायण' 'शुद्ध महाभारत' 'शुद्ध मनुस्मृति 'शुद्ध कृष्णायन' 'शुद्ध गीता' 'मानस पीयूष' भारतवर्ष का शुद्ध इतिहास आदि की सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा हुई है।

वैदिक प्रेस, मथुरा.